कालेज में स्ट्राइक का एक दिन

NAVEEN MADHU
I B. Com.

ट्रिन ... ट्रिन ... अलॉम ने मुझे सपनों के उस सुन्दर ससार से क्रूरता से यथार्थ धरती पर पटक दिया। सुबह की हलकी ठंडक में गाय बिस्तर को छोडकर मुझ से उठा न गया। धीरे से हाथ बढाकर अलॉम बंद किया। दूसरी ओर मुड कर लेट गया। तभी मम्मी की आवाज़ जोरों में सुनायी दी ..... सात बज गये.... क्या कालेज नहीं जाना। में ने बिस्तर से छलांग लगाई। अरे! बाप रे बाप, सात बज गये। जलदी से स्नानघर की ओर दौडा। सोचा - किसी भी हालत में लेट नहीं होना। फस्ट अवर लेट हो जाऊँ तो कक्षा में प्रवेश भी बंद। स्नानघर के अंदर से छोटे भाई टिंकू के गुनगुनाने की आवाज़ सुनायी दी। जलदी से बाहर आने को कहा। कोई प्रभाव नहीं था। अपना वक्त लेकर वह बाहर आया। साढे सात हो गये हैं। जल्दी से अंदर जाकर दरवाज़ा बंद कर दिया।

नहाने के बाद जब भाग कर अलमारी में देखा तो सब कपडे धुले पडे हैं। जलदी एक कपडा पहन कर आया। ठीक तरह से बाल संवारने का समय भी नहीं है। किताबें सभालकर चलने लगा। मगर कलम गायब। टिंकू के कमरे में जाकर देखा तो वह आराम से लिख रहा है। कलम छीन कर भागा। भूख के मारे बुरा हाल था। मगर अब बज गये हैं।

साढे आठ बजे को क्लास शुरू होती है। मम्मी ने मेरी पसंद का खाना बनाया है। मूँह से पानी आ रहा था। घडी की ओर देखा तो ... आठ पांच हो रहे हैं। दूध पी कर मम्मी की आँख बचा कर भाग लिया।

किसी तरह भागते हाँफते बस स्टॉप पहूँचा। दूर से बस आ रही है। लेकिन बस स्टॉप पर नहीं रुकी। लेकिन शायद ड्राइवर को मेरी दशा पर दया आयी हो। और उसने दूर लेजाकर गाडी रोक दी। ऐशचाई की दौड की तरह एक दौड लगाई और किसी न किसी तरह उसमें चढ गया। ठीक आठ पच्चीस को कालेज पहूँचा।

ठीक समय पर कालेज पहुँचने पर खुशी से सारी थकान दूर हो गयी। लेकिन नारे की आवाज़ सुनते ही मेरी खुशी मिट गयी। हे भगवान! क्या। आज स्ट्राइक है! ऊपर चढने की सीढियों पर वानरों की तरह बैठे नारे लगा रहे हैं। मन में सब क जी भरकर कोसा। पेड की छाया की तरफ बढा बढा जहाँ अपना दल इन्तज़ार कर रहा था।

इतने में कालेज कैनसल होने की घंटी सुनायी दी। फिर नारे बंद कर सब अपने काम पे चले गये। सारा दिन बेकार गया। क्या इसलिए गरम बिस्तर छोडा था ...। नास्ते के बारे में सोचते ही बहुत अफसोस हुआ। अब इतनी जलदी वापस जाने का मन भी नहीं था। इसलिए मित्रों के साथ कैन्टीन की ओर चल पडा। वहाँ जाकर गप्पों मारी कमेंटरी सुनि, फिल्मों कि बातें की। कैंटीन की चाय और पकौडी खायी तो खाया हुआ जोश वापस आया। कुछ देर बाद, मन ही मन भगवान से यह प्रथम करते हुए कि अगला दिन भी ऐसा न बीतें, मैं ने। अपने घर का रास्ता लिया।

टूटे हुए सपने

ZEENATH T. V.
II B. Sc. Zoology

अरमानों के मरघट में
मेरी तप्त चेतना
गिनती रहती है
अपने जीवन की घड़ियाँ।
कल तक थी मेरेलिए
जिन्दगी सुरभित फुलवारी
आज तो हाय! क्या कहूँ?
युग सा कल लगता है।
कल थी मैं उड़ती चिड़िया,
साथ रहा जीवन-साथी
आज तो वह न रहा
दुःख रहा मेरा साथी।
न मेरा कोई सहारा,
किनारा की कहीं नहीं
हाथ पैर थक भी गये
मंजिल तो दूर रही।
पर कटे पंछी सी मैं
तड़प तड़प कर जीती हूँ
हे! जीवन के कर्णधार
मुझे उस पार करो।

नारी का क्षेत्र - घर या बाहर

SUDHA NAIR III B. Sc.

'नारी का क्षेत्र घर है या बाहर' यह आज का एक विवादास्पद विषय है। आज नारी जीवन के हर क्षेत्र में पुरुष से कन्धे से कन्धा मिलाकर सफलतापूर्वक कार्य कर रही है। समाज की बदलती हुई परिस्थितियों ने नारी-जीवन को बहुत बदल दिया है। उसने इन परिस्थितियों के अनुरूप अपने आपको बदलने का प्रयत्न भी किया है। नारी ने घर की चारदिवारी से बाहर आकर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र को प्रभावित किया है। अध्यापिका से लेकर प्रधानमंत्री तक के पदों पर नारी ने सराहनीय काम किये हैं। अब तो नारी विमान चालिका भी बन गयी है। वेलन्तिना तेरेश्कोव, विश्व की प्रथम महिला अंतरीक्ष यात्री, नारी की साहसिकता की परिचायिका है। आज तो नारी ने अंडार्टिका की कड़ी ठंड पर भी विजय पा ली है। हिमालय की ऊँची चोटियाँ तो उसकेलिए आज अगम्य नहीं रहीं।

लेकिन क्या बाहर का क्षेत्र नारी केलिए घर से भी महत्वपूर्ण है? यह प्रश्न काफी उलझा हुआ है। क्या नारी बाहर के कार्य करते हुए गृहलक्ष्मी का काम भी सफलतापूर्वक कर सकती है? निस्सन्देह यह संभव हो सकता है। चूंकि नारी कर्तव्यपरायणता, उदारता, सहनशीलता की प्रतीक है, अतः घर और बाहर के क्षेत्रों में कुशलता से कार्य करके वह जीवन के हर क्षेत्र में सफल बन सकती है। जब तक वह समझोते की नीति अपनाएगी तब तक उसके मार्ग में कोई विघ्न उत्पन्न होने की संभावना नहीं है। अतः बाहर के क्षेत्रों अपना महत्वपूर्ण योगदान देने के साथ साथ वह गृहलक्ष्मी का कर्तव्य भी निभा सकती है।

शिक्षित प्रतिभावान नारी केलिए घर और बाहर दोनों क्षेत्र महत्वपूर्ण हैं। नारी चाहे जितनी भी उन्नति क्यों न कर ले, उसे कभी अपने घर की उपेक्षा नहीं करनी चाहिए। अपने संपूर्ण व्यक्तित्व केलिए उसे दोनों क्षेत्रों का समान रूप से ध्यान देना आवश्यक है। उसे सामाजिक एवं राजनीतिक कार्यों के साथ-साथ एक आदर्श माँ, बहन और पत्नी का कर्तव्य भी याद रखना चाहिए। एक नारी की जरूरत घर में भी है जहाँ वह बच्चों केलिए आदर्श माता है। और उसकी, बाहर भी जरूरत है जहाँ वह अपने सहकर्मियों के बीच एक आदर्श सहकर्मी है।

★